शिक्षा में मूल्यांकन
(Evaluation in Education)

शिक्षा के क्षेत्र में सामान्यतः छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों के मापन को ही मूल्यांकन कहा जाता है। और सच पूछिए तो यह आज भी मापन के पर्याय के रूप में ही प्रयोग किया जाता है। इस सन्दर्भ में पहली बात तो यह है कि उपलब्धि परीक्षाओं की उत्तर-पुस्तिकाओं पर अंक प्रदान करना मापन है, मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रथम पद है, अपने में मूल्यांकन नहीं है। मूल्यांकन में मापन के बाद मापन के परिणामों की पूर्व निश्चित मानदण्डों के आधार पर व्याख्या की जाती है। और दूसरी बात यह है कि आज शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों की केवल शैक्षिक उपलब्धियों का ही मापन एवं मूल्यांकन नहीं किया जाता अपितु उनकी बुद्धि, रुचि, अभिक्षमता एवं व्यक्तित्व आदि अनेक गुणों (चरों) का मापन एवं मूल्यांकन भी किया जाता है। छात्रों के गुणों के साथ-साथ शिक्षा से जुड़े प्रशासक, शिक्षक, अन्य कर्मचारी एवं अभिभावकों की क्रियाओं के शैक्षिक प्रभावों का भी मापन एवं मूल्यांकन किया जाता है और शिक्षा की नीति, उसके उद्देश्य, विभिन्न स्तरों पर उसकी पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों का भी मापन एवं मूल्यांकन किया जाता है और उस आधार पर उनमें सुधार के सुझाव दिए जाते हैं। तब शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन को निम्नलिखित रूप में परिभाषित करना चाहिए–

शैक्षिक मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षा से सम्बन्धित निर्णयों एवं शिक्षा से सम्बन्धित व्यक्तियों के गुणों एवं क्रियाओं का मापन किया जाता है और मापन के परिणामों की पूर्व निश्चित मानदण्डों के

Scanned with CamScanner

आधार पर व्याख्या की जाती है और उसके आधार पर सापेक्षिक परिणाम घोषित किए जाते है और उनमें सुधार के सुझाव दिए जाते हैं।

शैक्षिक मूल्यांकन और मापन में अन्तर

साधारणतः लोग शैक्षिक मूल्यांकन एवं मापन शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में करते हैं परन्तु वास्तव में इनमें पूर्ण और अंश का भेद होता है। मापन मूल्यांकन का प्रथम पद है, मूल्यांकन में मापन के बाद मापन के परिणामों की व्याख्या भी की जाती है।

कार्य पदों की दृष्टि से मापन क्रिया के केवल चार पद होते हैं–(i) मापीय गुण अथवा उद्देश्य एवं लक्ष्यों का स्पष्टीकरण, (ii) उपयुक्त मापन उपकरण अथवा विधि का चयन अथवा निर्माण, (iii) मापन उपकरण अथवा विधि का प्रयोग अथवा प्रशासन और (iv) परिणाम का लेखन। मूल्यांकन में इन पदों के अतिरिक्त तीन पद और होते हैं–(i) मापन परिणामों की व्याख्या, (ii) इस व्याख्या के आधार पर भविष्य कथन, सुझाव अथवा निर्देश और (iii) निर्णयों की निरन्तर परख।

शैक्षिक मूल्यांकन में शैक्षिक मापन के परिणामों की व्याख्या भौतिक मापन के परिणामों (मापों) की तरह नहीं की जा सकती क्योंकि भौतिक मापें पूर्ण माप होती हैं और शैक्षिक माप सापेक्षिक माप होती है। उदाहरणार्थ, यदि राम का भार 60 किग्रा हो और श्याम का 30 किग्रा हो तो यह कहा जा सकता है कि राम का भार श्याम के भार से दो गुना है परन्तु यदि किसी शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण में राम को 60 अंक और श्याम को 30 अंक प्राप्त हों तो यह नहीं कहा जा सकता कि राम की शैक्षिक उपलब्धि श्याम की शैक्षिक उपलब्धि से दो गुनी है, यह दो गुनी से अधिक भी हो सकती है और कम भी। इसकी व्याख्या करने के लिए अब सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है।

शैक्षिक मूल्यांकन एवं परीक्षण में अन्तर

शैक्षिक मूल्यांकन एक व्यापक सम्प्रत्यय है। इसके द्वारा शिक्षा नीति, शिक्षा योजना, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा की पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों की उपयोगिता; शिक्षा प्रशासक, शिक्षक एवं अभिभावकों की क्रियाओं की शैक्षिक उपयोगिता और छात्रों की बुद्धि, रुचि, अभिक्षमता एवं व्यक्तित्व आदि मानसिक गुण एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धियों आदि का मापन एवं मापन परिणामों की व्याख्या की जाती है और इस व्याख्या के आधार पर भविष्य कथन, सुझाव अथवा निर्देश दिए जाते हैं। इसके विपरीत परीक्षण एक संकुचित सम्प्रत्य है, यह मापन की एक विधि मात्र है, यह मापन से भी अधिक संकुचित सम्प्रत्यय है।

शैक्षिक मूल्यांकन एवं परीक्षा में अन्तर

शैक्षिक मूल्यांकन एक व्यापक सम्प्रत्यय है। इसके द्वारा शिक्षा नीति, शिक्षा योजना, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा प्रशासक, शिक्षक एवं अभिभावकों की शैक्षिक क्रियाओं की उपयोगिता और छात्रों की बुद्धि, रुचि, अभिक्षमता एवं व्यक्तित्व आदि मानसिक गुणों एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धियों आदि का मापन और फिर इन मापन परिणामों की व्याख्या और अन्त में इस व्याख्या के आधार पर भविष्य कथन, सुझाव अथवा निर्देश दिए जाते हैं। इसके विपरीत परीक्षा का प्रयोग छात्रों की केवल शैक्षिक उपलब्धियों के मापन एवं मूल्यांकन के लिए किया जाता है। स्पष्ट है कि यदि केवल परीक्षा की दृष्टि से देखें-समझें तो मूल्यांकन परीक्षण का एक अंग है और यदि उसे व्यापक रूप में देखें-समझें तो उसका क्षेत्र परीक्षा में प्रयुक्त मापन के परिणामों तक की व्याख्या करने तक सीमित नहीं है, उसका क्षेत्र अति व्यापक है।

विशेष

यूँ मापन और मूल्यांकन में अन्तर है परन्तु चूँकि मापन मूल्यांकन का एक अंग है, प्रथम पद है, इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में अब इसे संयुक्त सम्प्रत्य–मापन एवं मूल्यांकन के रूप में प्रयोग किया जाता है। दूसरी बात यह है कि शिक्षा के क्षेत्र में मापन का तब तक कोई अर्थ नहीं होता जब तक मापन परिणामों की व्याख्या नहीं की जाती और जब मापन परिणामों की व्याख्या की जाती है तो मूल्यांकन कहा जाता है।

Scanned with CamScanner